

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की मॉक (डब्ल्यू) के प्रति जागरूकता का अध्ययन

प्रदीप कुमार शर्मा

शोधकर्ता

तीर्थाकर महावीर विश्वविद्यालय,

मुरादाबाद

डॉ० विनोद कुमार जैन

(सह-आचार्य, शिक्षा संकाय)

तीर्थाकर महावीर विश्वविद्यालय,

मुरादाबाद

अध्ययन सार

आज मनुष्य डिजिटल युग में जीवन-यापन कर रहा है। विशेषकर 21 वीं शदी में कौशल और मानव पूँजी आर्थिक समृद्धि और सामाजिक कल्याण की रीढ़ बन गई है। प्रातःकालीन से लेकर रात्रि तक हम मोबाइल फोन, टेबलेट, आईपैड, कम्प्यूटर, सोशल मीडिया आदि में व्यस्त रहते हैं। लेकिन आज के इस नये युग में प्रवेश के मूल में शिक्षा की ही भूमिका है। शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में अधिगम का महत्वपूर्ण स्थान है। समय के साथ सीखने की प्रक्रियाओं में परिवर्तन आया है। ई-अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पारम्परिक कक्षा-कक्ष न होकर पाठ्यक्रम व प्रोग्राम ऑनलाइन होते हैं। तकनीकी के इस युग में अधिकांश छात्रों एवं शिक्षकों का बहुत समय इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर गुजरता है।

आज अधिकांश शिक्षक अपने विषयों को ऑनलाइन पढ़ाते हैं। ई-अधिगम (MOOC's) में हम जब चाहे तब जानकारी दे सकते हैं। शिक्षक वर्ग एवं छात्र वर्ग में ई-अधिगम को लेकर काफी दिलचस्पी है। ई-अधिगम के प्रोत्साहन से शिक्षा सुविधाओं के विस्तार तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के ध्येय प्राप्ति में सहायक है। वर्तमान समय में स्मार्टफोन, इन्टरनेट, वाई-फाई जैसी तकनीक व्यावहारिक रूप से सभी को सस्ती दरों पर उपलब्ध होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में ई-अधिगम (MOOC's) का प्रयोग काफी लोकप्रिय हो रहा है। अध्ययन में सम्मिलित अधिकतर शिक्षकों को ई-अधिगम (MOOC's) से सम्बंधित जानकारी थी, परन्तु ई-अधिगम का उपयोग अपने औपचारिक शिक्षण में करने को लेकर सहज नहीं थे। ई-अधिगम (MOOC's) द्वारा सीखना ज्यादा आसान व लचीला होता है क्योंकि एक विषय को सीखने एवं सिखाने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग होता है।

कूट शब्द: उच्चतर माध्यमिक, शिक्षक, जागरूकता, मॉक (ई-अधिगम)

प्रस्तावना-

शिक्षक अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग विद्यार्थी के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 21वीं सदी तकनीकी रूप से बहुत प्रभावशाली सिद्ध हो रही है जो तकनीकी के विकास में सहायक है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण है-

ई-अधिगम, स्वयं पोर्टल (MOOC's) जो कि कोविड-19 की महामारी के दौरान शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों के लिए बहुत लाभदायक साबित हुए थे।

ई-अधिगम का अर्थ है “इलैक्ट्रॉनिक लर्निंग” अर्थात् इलैक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना एवं कराना। इसको दो भागों में बांटा जा सकता है-

1. समकालिक (SYNCHRONOUS),
2. असमकालिक (ASYNCHRONOUS)

1. समकालिक- इसका अर्थ है कि “एक ही समय में।” समकालिक अधिगम में सीखने व सीखाने वाला अलग-अलग स्थानों से एक ही समय में सहभागिता करते हैं, जिसमें सीखने वाला अपने सवालों को पूछकर अपनी शंकाओं का समाधान तुरन्त ही समस्याओं का समाधान कर की है। इसी कारण इसे “तुरन्त सीखना” (Real Time learning) भी कहते हैं।

2. असमकालिक- इसका अर्थ है कि “एक समय में नहीं।” असमकालिक अधिगम में सीखने और सीखानेवाले के बीच वास्तविक समय में सहभागिता करने की कोई अवधारणा नहीं है। असमकालिक अधिगम में जानकारी पहले से ही मौजूद रहती है, जिससे सीखने वाले अपने सुविधा के अनुसार पढ़ सकता है। इसमें समय की कोई पाबन्दी नहीं रहती है।

ई-अधिगम कि प्रसार व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दृष्टि से एक उपयुक्त व्यवस्था है। बिना किसी भेदभाव के लिए उपलब्ध होने वाली शिक्षा है। आज के समय में यह सबसे कम लागत की कुशल तकनीक है जो सभी छात्रों एवं शिक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। कक्षा में शिक्षक द्वारा किसी पाठ को पढ़ाने के बाद बार-बार उसका दोहराव नहीं हो सकता है, जबकि ई-अधिगम में तैयार पाठ छात्र एवं शिक्षक एक से अधिक बार अपनी सुविधानुसार व समझ की क्षमतानुसार ग्रहण कर सकता है। ई-अधिगम की सुविधा के कारण छात्र एवं शिक्षक नवीनतम जानकारियों से परिचित रहते हैं। ई-अधिगम से धन की भी बचत होती है, क्योंकि पाठ्यक्रम ऑनलाईन उपलब्ध होने के कारण पुस्तकें व अन्य शिक्षण सामग्री पर खर्च नहीं करना पड़ता है। ई-अधिगम उन छात्रों के लिए वरदान बन गया है जो किसी कारणवश स्कूल व कॉलेज जाने में सक्षम नहीं हैं।

मॉक (ई-अधिगम) की चुनौतियाँ-

- ❖ मॉक के द्वारा तत्काल शंका का समाधान नहीं हो पाता है, साथ ही पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए प्रेरणा भी नहीं मिलती है। इस कारणवश छात्र इसे बीच में ही छोड़ देते हैं।
- ❖ मॉक की सबसे बड़ी कमी इसके तकनीक प्रशिक्षण के मामले में सामने आती है, क्योंकि इनमें प्रयोगों द्वारा विषय को समझने की विधि कारगर साबित नहीं होती है।
- ❖ मॉक पाठ्यक्रमों के लिये साइन-अप करने वाले में से 90 प्रतिशत से अधिक छात्र पाठ्यक्रम पूरा नहीं करते हैं। इससे मॉडल की प्रभावकारिता पर सवाल उठता है।
- ❖ पाठ्यक्रम पूरी तरह से मुफ्त उपलब्ध होने के कारण मॉक से आर्थिक रूप से भी सफल नहीं माना जा रहा है।
- ❖ मॉक कभी भी आपको स्कूल जैसा वातावरण नहीं दे सकता है, जिसमें आप शिक्षक के साथ आमने-सामने सहभागिता कर सके।

उद्देश्य-

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की मॉक के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षकों की मॉक के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

शोध विधि-

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल के बुलन्दशहर क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में किया गया है।

शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मेरठ एवं बुलन्दशहर जनपदों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का चयन निर्देशन विधि द्वारा किया गया है। शोधार्थी का मूल निवास स्थान बुलन्दशहर (उ०प्र०) है। इसलिए अध्ययन का क्षेत्र बुलन्दशहर जनपद का चयन किया गया है। इस अध्ययन के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के शिक्षकों को चुना गया है।

शोध के उद्देश्यों व प्रतिदर्श को ध्यान में रखते हुए शोध में प्रश्नावली विधि का चयन सही एवं व्यावहारिक है। प्रश्नावली की एक क्रमबद्ध सूची होती है जो अध्ययन विषय से सम्बंधित तथ्यों को संकलित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। प्रश्नावली को सम्बंधित विषय विशेषज्ञों से जांच कराई गई, जिसमें उनके द्वारा दिए गए सुझावों के अनुसार संशोधन करके प्रश्नावली तैयार की गई।

तथ्यों का संकलन हेतु प्रश्नावली विधि में 5 प्रश्न रखे गये हैं; जिसमें सभी 15 प्रश्न सहमत और असहमत से सम्बंधित हैं। 3 उन्हीं में चुनभर उत्तरदाताओं को अपना मूत प्रस्तुत करना होगा विकल्प चुनम एक वि के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को सारणीबद्ध करके प्रश्नावली अनुसूची के विश्लेषण किया गया है। परिणाम प्रतिशत विधि से प्राप्त किया गया।

परिणाम एवं परिचर्चा-

मॉक के बारे में 92 प्रतिशत शिक्षकों को जानकारी है और 8 प्रतिशत शिक्षकों को इस बात से असहमति है। शोधार्थी को विश्वास है कि मोबाइल का ज्यादा उपयोग करने से और इंटरनेट डाटा के सस्ता होने से 92 प्रतिशत शिक्षकों को मॉक की जानकारी है और 8 प्रतिशत शिक्षक ग्रामीण परिवेश में रहने के कारण मॉक से परिचित नहीं हैं। मॉक ऑनलाइन शिक्षा का एक बहुत अच्छा विकल्प है, इस विचार से 70 प्रतिशत शिक्षक सहमत और 30 प्रतिशत शिक्षक असहमत है। शोधार्थी का मानना है कि बहुत सी ऐसी जानकारीयें हैं जिनके बारे में हमें पता नहीं होता, उनकी भी जानकारी हमें मॉक (ई-अधिगम) से हो जाती है।

मॉक (ई-अधिगम) के माध्यम से पढ़ाई करना एवं कराना पसन्द करते हैं तो 78 प्रतिशत शिक्षक को सहमत है और 22 प्रतिशत शिक्षक इस विचार से असहमत है। शोधार्थी का मानना है कि आज अगर किसी भी क्षेत्र के बारे में जानकारी चाहिए तो उसे इंटरनेट पर खोज सकते हैं। हम अपनी सुविधानुसार कहीं भी और कभी भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मॉक (ई-अधिगम) का उपयोग अपनी औपचारिक शिक्षा लेने एवं देने में करते हैं तो 54 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 48 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि यह तकनीक सहज उपलब्ध हो रही है और इस तकनीक के द्वारा किसी भी विषय को जल्दी व आसानी से समझने में मदद मिलती है। मॉक (ई-अधिगम) परम्परागत शिक्षा से बेहतर है तो 34 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 66 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि पारम्परिक शिक्षा के मुकाबले मॉक (ई-अधिगम) से सीखना ज्यादा आसान और लचीला है, क्योंकि किसी भी विषय को कई बार समझा और अभ्यास किया जा सकता है। पारम्परिक शिक्षा की तरह अपनी समस्याओं का समाधान तुरन्त ही नहीं किया जा सकता है। मॉक (ई-अधिगम) दूरस्थ शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए एक बहुत अच्छा विकल्प है, तो 88 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति जताई और 12 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमति में

जवाब दिया। यह बात शोधार्थी के लिए वरदान साबित हुआ है कि जो छात्र किसी वजह से कॉलेज नहीं जा पाते हैं वे घर पर ही मॉक (ई-अधिगम) द्वारा अपने विषय सम्बंधित जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

मॉक (ई-अधिगम) औपचारिक शिक्षण विधियों की तुलना में पाठ्यक्रम को बेहतर समझने में मदद करता है, तो 46 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 54 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि मॉक (ई-अधिगम) में एक ही विषय को सीखने-सीखाने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जैसे- ऑडियो, वीडियो, क्विज आदि। ई-अधिगम द्वारा किसी भी विषय को रोचक तरीके से सीखा एवं अभ्यास किया जा सकता है। मॉक (ई-अधिगम) उपयोगी है क्योंकि पाठ्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध है तो इससे 72 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 28 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि मॉक (ई-अधिगम) उपयोगी है क्योंकि यह ऑफलाइन संसाधनों की कमी पूरी करता है। ई-अधिगम शिक्षकों को सीखने एवं सीखाने की प्रेरणा को प्रभावित करती है, तो इससे 38 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमति और 62 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमति में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि तकनीकी और ऑनलाइन अधिगम प्रणाली में सुधार होने से, इस पद्धति के लचीले हो जाने के कारण कई कॉलेजों में भी ई-क्लासरूम को बढ़ावा दिया जा रहा है।

मॉक (ई-अधिगम) में ई-अधिगम के प्रवेश के पश्चात् सकारात्मक बदलाव आया है तो 40 प्रतिशत शिक्षक इस मत से सहमत और 60 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमति में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि वर्तमान में कम्प्यूटर तकनीकों और अधिक विकसित होने के कारण एक अलग ही प्रकार की अधिगम सिद्धान्त इलैक्ट्रॉनिक्स डिवाइस द्वारा प्राप्त की जा रही है। ई-अधिगम के आ जाने के बाद छात्र परम्परागत कक्षाओं से दूर हो गये हैं, तो 36 प्रतिशत शिक्षक इस मत से सहमत है और 64 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि वर्तमान समय में कम्प्यूटर, टेबलेट एवं मोबाइल कोन आदि के अधिक उपयोग के कारण छात्र एवं शिक्षक ई-अधिगम द्वारा सीखने एवं सीखाने में दिलचस्पी लेते हैं, क्योंकि किसी भी विषय को कई बार देख व सुनकर समझ सकते हैं।

ई-अधिगम आने वाले समय में औपचारिक शिक्षण का स्थान ले सकता है, तो इस मत से 34 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 66 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि वर्तमान समय में तकनीकी का जिस तरह से प्रचार-प्रसार हो रहा है, और बहुत से ऐसे शिक्षण संस्थान हैं जिनमें ना बैग, ना किताबें व डिजिटल क्लासरूम जैसी सुविधाएं कर दी हैं, जिन्हें देखकर ऐसा लगता लगता है कि ई-अधिगम को आने वाले समय में बढ़ावा मिल सकता है। ई-अधिगम के आने के बाद शिक्षक परम्परागत कक्षाओं से दूर हो गये हैं तो 36 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 64 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि ई-अधिगम के बढ़ते साधनों से सीखना और सीखाना काफी आसान हो गया है क्योंकि आप अपने कम्फर्ट के हिसाब से कहीं भी और कभी भी सीख सकते हैं। इसमें समय व स्थान की कोई पाबन्दी नहीं होती है।

ई-अधिगम के उपयोग से शिक्षकों के शिक्षण प्रदर्शन में सुधार हुआ है तो 42 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 58 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि ई-अधिगम में एक ही के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग होता है जैसे- ऑडियो, वीडियो, गेम्स आदि जिससे शिक्षण और भी रुचिकर बन जाता है और छात्र एवं शिक्षक अपनी रुचि से किसी भी तकनीक का उपयोग कर सीख एवं सीखा सकते हैं। ई-अधिगम द्वारा पर्यावरण संरक्षण में मदद मिली है तो 34 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 66 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि ई-अधिगम को पर्यावरण के हिसाब से बढ़ावा मिला है क्योंकि यह एक पेपरलेस अधिगम है। ई-अधिगम में ज्ञान अर्थात् जानकारी को पुस्तकों को जगह वेब में स्टोर किया जाता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलती है।

भविष्य में मॉक (ई-अधिगम) शिक्षण का एक बेहतर विकल्प है, जिसमें छात्र एवं शिक्षक अभ्यास भी काफी कर सकते हैं तो 46 प्रतिशत शिक्षकों ने सहमत और 54 प्रतिशत शिक्षकों ने असहमत में जवाब दिया। शोधार्थी का मानना है कि तेजी से बढ़ती तकनीकी के कारण परम्परागत कक्षाओं में जाकर सीखने के मुकाबले ऑनलाइन सीखना ज्यादा आसान व लचीला बनता जा रहा है। इसलिए भविष्य में ई-अधिगम परम्परागत शिक्षण के साथ जुड़कर शिक्षण का एक बेहतर साधन बनेगा।

अध्ययन के पश्चात् यह सुझाव दिया जा सकता है कि मॉक (ई-अधिगम) को औपचारिक शिक्षण संस्थानों में ही उपलब्ध करवायी जाय, ताकि छात्र एवं शिक्षक नई तकनीक का उपयोग कर अपने कौशल को और बेहतर बनाने में सहायता ले सकें। साथ ही इस तकनीक का उपयोग करके वे अपने शिक्षण प्रदर्शन में सुधार कर सकें।

भविष्य के लिए सुझाव-

- ❖ मॉक को प्रासंगिक बने रहने के लिए अपने स्वरूप को बदलने की आवश्यकता है।
- ❖ इसके अंतर्गत B2B मॉडल को अपनाया जा सकता है, जहाँ मॉक को संचालित करने वाले अपने छात्रों के कौशल विकास हेतु बड़े कॉर्पोरेट्स के साथ साझेदारी कर सकते हैं।
- ❖ इसे पूर्णतया मुफ्त करवाने की बजाय फ्रीमियम मॉडल (FREEMIUM MODELS) में उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

संदर्भ-

1. एडेलकै. ए°ए° और ओलोरुनसोला, आर° (2010) शैक्षणिक पुस्तकालयों में ई-संसाधनों के उपयोग में प्रशिक्षण: एक विश्वविद्यालय का दृष्टिकोण लाइब्रेरी, हाई टेक न्यूज, 27 (67). 16-19
2. बंसल, एम° (2018) ग्रामीण परिवर्तन के लिए शिक्षा की भूमिका पर एक अध्ययन, सामाजिक विज्ञान के एकीकृत जर्नल, 15(1), 27-30
3. बायेक, आर° (2016) एमओओसी शिक्षार्थियों की जनसांख्यिकी और प्रेरणा का अन्वेषणात्मक अध्ययन: समूहों में शामिल छात्रों का मामला, ओपन प्रैक्सिसार, 8(3), 223-233
4. भल्ला, जे° एंड साइंसेस, एस°ओ°एस° (2018) शिक्षकों के लिए कंप्यूटर की पहुंच: वास्तविकता या किंवदंती?, सामाजिक विज्ञान के एकीकृत जर्नल, 5(1), 7-14
5. बोरदोलोई, आर° (2018) भारत में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा में परिवर्तन और सशक्तिकरण, एशियन एसोसिएशन ऑफ ओपन यूनिवर्सिटीज जर्नल, 13(1), 24-36
6. बराड़, के°एस°, सिंह, बी° और कौर, ए° (2019) भारत के पुस्तकालय और सूचना विज्ञान शोधकर्ताओं द्वारा ई-पत्रिकाओं का उपयोग: एक अनुभवजन्य विश्लेषण, पुस्तकालय दर्शन और अभ्यास, 2019
7. कैस्टिल, वार्ड°ए°, सिल्कोक्स, डी° और फिशर, एल° (2010) मानव-पशु संबंधों के प्रति सेवा पूर्व छात्रों के दृष्टिकोण पर शैक्षिक प्रशिक्षण प्रभाव का मूल्यांकन, सामाजिक विज्ञान के एकीकृत जर्नल, 6(1), 6-11
8. डेस्पुजील, आई°एम° दुरो, सी° बसकेस, जे° और कैलेरो, ए° (2014) जनसांख्यिकी का विश्लेषण और स्पेनिश भाषी समुदाय के लिए बड़े पैमाने पर मूक परिनियोजन के छात्र की राय सर्वेक्षण के परिणाम, शिक्षा सम्मेलन में आईईईईई फ्रंटियर्स (एफआईईई) कार्यवाही, 1-81
9. गर्ग, ए° शर्मा, ए° और गर्ग, एन°बी° (2020), भारत में उच्च शिक्षा में वेब आधारित शिक्षा और शिक्षण का प्रभाव, कम्प्यूटेशनल और सैद्धांतिक नैनोसाइंस जर्नल, 17(0), 2609-2694